CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261
आलेख
Received 08.11.2022 Reviewed 15.11.2022 Accepted 25.11.2022

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

हिन्दी पत्रकारिता में पंडित झाबरमल्ल शर्मा की देन

* डॉ रिया

मुख्य शब्द : *शेखावाटी जनपद, पत्रकारिता आदि.*

जीवन परिचय

शेखावाटी जनपद के झुन्झुनूं जिले के खेतड़ी तहसील के गांव जसरापुर में 23 जनवरी 1888 ई. को पंडित झाबरमल्ल शर्मा का जन्म हुआ। 14 वर्ष की आयु में ही श्री पंडित जी अपने मित्र बाबू भगवती प्रसाद जी की दारूका के साथ कलकत्ता चले गए। कलकता जाने के बाद पंडितजी का ध्यान पत्रकारिता की तरफ गया। कलकता में पंडितजी की भेंट पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र से हुई थी जो हिन्दी पत्रकारिता में उंचा स्थान रखते थे। ये भारतेन्दु जी के समकालीन थे, इन्होने ही पंडितजी को पत्रकारिता व पत्र संपादन की कला सिखाई थी। पंडित जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक पत्रकार के साथ–साथ समाज सेवी, इतिहासकार, पुस्तक प्रेमी व दूरदर्शी संग्राहक थे। पंडितजी को 'पद्म भूषण', महाराणा कुम्भा पुरस्कार, साहित्यकार पुरस्कार के साथ 'साहित्य वाचस्पति', 'मनीषी' की उपाधियों से नवाजा गया। पत्रकारिता के 'भीष्म पितामह' पंडितजी के नाम पर वर्ष 2000 में जयपुर में ' पंडित झाबरमल्ल शोध संस्थान' की स्थापना की गई।

हिन्दी पत्रकारिता

हिन्दी का पहला सप्रमाण पत्र 30 मई 1826 को कलकत्ता से 'उदन्त मार्तण्ड' निकला था। उस समय सम्पादन कार्य सम्पादक की लेखनी के पैनेपन व देश एवं समाज की दुरवस्था की व्यापक अनुभूति से ही प्रेरित था। उस समय पत्र प्रकाशन व्यवसाय नही, एक मिशन था। दैनिक पत्रों की वास्तविक परम्परा भारत मित्र से चली। दैनिक भारत मित्र व कलकत्ता समाचार एक पीढी के पत्र थे।

पंडितजी संधिकाल के ऐसे पत्रकार थे जिन्हे अपनी विरासत पर गर्व था। पंडितजी ने हिन्दी भाषा को आधुनिक पत्रकारिता से जोड़ा और स्वयं अनेक प्रकार की कठिनाइयां सहते हुये पत्र सम्पादकों के समक्ष एक जुझारू पत्र चलाने के लिए कष्ट झेलने का उदाहरण प्रस्तुत किया।

पंडित शर्मा के सामने पत्रों के तीन वर्ग थे– प्रथम वर्ग में सरकार के पक्षपाती थे, दूसरे वर्ग में प्रधानतः वे पत्र थे जिनकी नीति अवसरवादी थी, तीसरे वर्ग में वे पत्र थे जो विदेशी सरकार के विरोधी थे तथा भारत के सच्चे हितैषी थे। पं. शर्मा द्वारा संपादित पत्र 'कलकत्ता समाचार' व 'हिन्दू संसार' तीसरे वग्र के पत्र थे। दोनों ही पत्र अंग्रेजी सरकार के कट्टर विरोधी थे। पंडितजी ने अपने पत्रों के माध्यम से समकालीन पत्रों व संपादको से आह्वान किया कि वे स्वाधीनता के लिए अंग्रेज सरकार की नीतियों का विरोध करे तथा जनता को जाग्रत करें। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राज्य के एकीकरण के बाद राजस्थान में पत्रकारिता का व्यावसायिक रूप प्रारम्भ हो गया। 7 मार्च 1956 को जयपुर से 'राजस्थान पत्रिका' एक सांयकालीन दैनिक के रूप में प्रारम्भ हुआ। इस दौर में राजस्थान में साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी काफी संख्या में हुआ। इन पत्रिकाओं में 'लहर', भारतेन्दु, ज्योति, 'नवनिर्माण' प्रमुख है। इन पत्रिकाओं में 'लहर' व 'मधुमती' का विशिष्ठ स्थान रहा।

हिन्दी पत्रकारिता में योगदान

पंडितजी ने हिन्दी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने अनेक पत्रों का संपादन किया। 'ज्ञानोदय', 'भारत', 'मारवाड़ी' अग्रवाल आदि साप्ताहिक पत्रों का संपादन किया। 'कलकत्ता समाचार' व 'हिन्दू संसार' दैनिक पत्रों का संपादन भी पंडितजी ने किया।

'भारत' साप्ताहिक समाचार पत्र द्वारा पंडितजी ने देश प्रेम की भावना का प्रचार–प्रसार किया व साथ ही हिन्दी भाषा के विकास में भी योगदान दिया। 'मारवाड़ी' और 'अग्रवाल' जाति विशेष के समाचार पत्रों ने अपनी जाति के उत्थान के लिए कार्य किया। साथ ही देश सेवा व हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया। 'कलकत्ता समाचार' ने 1914 से 1925 ई. तक हिन्दी पत्रकारिता, साहित्या और भाषा के उत्थान के प्रति सजग रहा व देश–दशा के सुधार, समाज और धर्म जागरण के मुद्दो पर लगातार विमर्श करता रहा। मिलावटी घी के लिए 'धृत' आंदोलन कलकत्ता समाचार ने ही चलाया। आडम्बरों, कुरीतियों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों व भ्रष्टाचार के विरूद्व भी दोनों पत्रों ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये। अशिक्षा, वृद्व विवाह, बहू विवाह, बाल विवाह,, सती प्रथा, कुलीप्रथा, अश्लील सीठनों (गीतों) के गायन की प्रथा, रिश्वतखोरी, गौहत्या, मिलावट जैसी कुरीतियों का इन पत्रों के माध्यम से विरोध किया गया।

पंडित झाबरमल्ल शर्मा ने लगातार 20 वर्ष तक पत्रकारिता से देश की सेवा की। वे हर तथ्य को प्रमाणितकता की कसौटी पर कसने के बाद ही विचार रूप में प्रकट किया करते थे। पं. शर्मा के समय पत्रकारिता 'व्यवसाय' नही 'मिशन' थी। पंडितजी का विश्वास था की ''आज इस विधा का जो चहूँमुखी विकास हो रहा है, मैं कहना चाहूंगा की उसकी नींव इतनी ठोस और मजबूत लगी है कि इमारत को निश्चिंत होकर कितनी भी उंची ले जा सकते है।''

पंडितजी पत्रकारिता की कुर्सी को न्यायाधीश की कुर्सी मानते थे। 'कलकत्ता समाचार' व 'हिन्दू संसार' में रहते हुये पंडित शर्मा ने इस विश्वास को कार्य रूप में परिणत कर दिया।

आज की व्यावसायिकता व प्रतिस्पर्धा के दौर में संचार माध्यम सस्ती लोकप्रियता व मनोरंजन पर ज्यादा जोर देने लगे है तथा आम आदमी व विकास के मुद्दों से दूर हो गये है। व्यावसायिकता की मार पत्रों की विश्वसनीयता पर पड़ती है। पंडिजी की मान्यतानुसार ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे पत्र की विश्वसनीयता पर आँच आये। पंडितजी ने समाचार पत्र को जन–जीवन से जोड़ने के लिए त्योहारों, पर्वो तथा विशेष अवसरों पर अतिरिक्त विशेषांक निकालने की परंपरा को आगे बढाया।

पंडितजी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राजनैतिक व सामाजिक सुधार किए। आजादी की लड़ाई में भी पंडितजी की पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पंडितजी एक तरफ गांधीजी के सत्याग्रह सिद्वान्त के पक्षधर थे दूसरी तरफ वे तिलक विचारधारा के भी समर्थक थे। कांग्रेस बंटवारे के समय पंडितजी ने अपने लेखों के माध्यम से दोनों खेमो को एक होने का अनुरोध किया था। क्योंकि उन्हें पता था कि उस वक्त देश को एकता की जरूरत थी ना कि अलग–अलग खेमों में बंटकर अपनी शक्तियों को खोने की।

पंडितजी को हिन्दू धर्म और संस्कृति पर गर्व था किन्तु वर्तमान दशा से वे दुःखी थे। उन्होनें लिखा '' कभी हम संसार में धर्म व ज्ञान के नेता थे। शक्ति और सम्यता हमारी संसार में सबसे अधिक थी। जो जाति अपने अतीतकालीन गौरव स्मरण के साथ ही अपनी वर्तमान दशा पर विचार कर भावी कार्यक्रम निश्चय करती है, उसे उंचा उठाने से कोई रोक नही सकता ––– हिन्दू समाज की वर्तमान दशा क्या है, यह बतलाना उस समाज की कारूणिक दुर्दशा का चित्र अंकित करना है जिसका पतन आशातीत हो चुका है। विद्या गयी, बल गया, सम्पति गयी, व्यापार गया, यशा और आदर गया, आशा और विश्वास छोड़ अब क्या बाकी है ?'' खेतड़ी में विवेकानंद स्मृति मंदिर की स्थापना पं. शर्मा का एक स्मरणीय कार्य है। साथ ही बच्चों का विधालय भी स्थापित किया जिसमें पुस्तकालय, खेलकूद के मैदान, छात्रावास आदि की व्यवस्था की।

युग–सदेश

पंडितजी ने पत्रकारिता को अपना कर्तव्य समझा तथा आजीवन उसे निभाते रहे। देश व समाज के हित के लिए उन्होने अपने पत्र को माध्यम बनाया तथा इसी के द्वारा जनचेतना का कार्य पूरा किया। उन्होने अपने दोनों समाचार पत्रों के माध्यम से पत्रकारिता को उत्कर्ष की चरम सीमा तक पहुचाया व हिन्दी साहित्य को भी समृद्व बनाया। पंडितजी ने मानवतावाद का उद्घोष किया। उन्होने

मानवतावादी विचारों का चित्रण 'अरविन्द चरित', 'गांधी गुणानुवाद' आदि कृत्तियों में किया। उनका मानना था कि मानव प्रेम से ही यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है:–

भेदभावना दूर कर, करि हंसा का त्याग

परस्पर में एकता बढे प्रेम अनुराग।

रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, तिलक, अरविन्द, गांधीजी जैसे महापुरूष पंडितजी के आदर्श थे। पंडितजी ने अपने साहित्य में राष्ट्रप्रेम व निरतंर कर्मशीलता का संदेश दिया। प पंडित शर्मा भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी थे। वे भारतीय संस्कृति के मूल्यों सत्य, अहिंसा, परोपकार, मानव प्रेम, न्याय, विश्वबंधुत्व आदि के समर्थक थे। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति धर्म, दर्शन विश्व की अन्य संस्कृतियों धर्म, दर्शन से श्रेष्ठ है।

भारतवासियों द्वारा पश्चिमी सभ्यता अपनाने पर वे लिखते है–

टोपी, साफा, पगड़ी गयी पुरानी चाल,

सूट–बूट के ठाठ में बना देश नक्काल।

नही रहा अब देश में खाद्य–खाद्य विचार,

मद्यपान भी बना गया, शिष्टों का आचार।

भारतीयपन नही बचा तनिक अभियान

स्वजन विदेशी ताल पर लगे तोड़ने तान।।

पंडितजी ने 20 वर्षों तक हिन्दी पत्रकारिता की सेवा की। पंडितजी पत्रकारिता व हिन्दी साहित्य के एकमात्र ऐसे शिखर पुरूष थे जिन्होने अपनी पूरी क्षमता और ज्ञान का प्रयोग उन सब साहित्यकारों, पत्रकारों, राष्ट्रपुरूषों व शेखावाटी के राजा अजीत सिंह की कीर्ति रक्षा में किया। उन्होने अपनी पत्रकारिता से देश प्रेम, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति की रक्षा राष्ट्र भाषा की उन्नति का संदेश दिया। पंडित झाबरमल्ल शर्मा एक पत्रकार, इतिहासकार, समाज सेवक, साहित्यकार के रूप में पीढियों के पथ प्रदर्शक रहेगे।

संदर्भ ग्रंथ

(1) समय से साक्षात्कार सं. श्री विजयदत्त श्रीधर

(2) हमारे पुरोधा सं. हेतु भारद्वाज

(3) राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता डॉ. मनोहर प्रभाकर

(4) हिन्दी के यशस्वी पत्रकार क्षेमेन्द्र सुमन

(5) भाषण के अंशः अभिनन्दन समारोह जयपुर के अवसर पर

Corresponding Author

** Dr. Riya*

Assistant Professor

Shree R.R. Morarka Govt. College, Jhunjhunu

E-mail ID – riya.budania02@gmail.com, Mob. - 9461584540